आभार ज्ञापन

मानवीय जीवन में बहुत सारे ऐसे कार्य होते हैं, जिन्हें हम अपने अकेले के बलबूते पर नहीं कर पाते । जीवन में किये जाने वाले विविध महत्वपूर्ण कार्यो में जब हमें कोई कठिनाई आती है या प्रश्न आते हैं, तब इन प्रश्नों को सुलझाने के लिए हमारी नजर अपने आप ही किसी गुणी, ज्ञानी, विद्वान तथा अनुभवी व्यक्तियों को खोजने लगती है, जिससे हाथ में लिए हुए कार्य को सुनियोजित रुप से व प्रभावी ढंग से समाज के समक्ष रखते हुए अपनी विशिष्ट छबि प्रस्थापित करने में सफलता प्राप्त हो सके । जीवन में प्राप्त ऐसे महत्वपूर्ण व ज्ञानी व्यक्तियों का ऋण हम सात जन्मों तक नहीं चुका सकते; परंतु उन महानुभावों का आभार मानना हमारा कर्तव्य हो जाता है । इसी प्रकार प्रस्तुत शोध-प्रबंध के लिए मुझे विभिन्न गुणी, ज्ञानी, विद्वानों की सहायता व मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है, जिनके प्रति आभार व्यक्त करना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ।

इस शोध कार्य को पूर्ण करने में मुझे मेरे पूज्यनीय माताजी (सौ. आशा विजयकुमार संत) तथा पिताश्री (विजयकुमार गंगाधर संत) ने भरपूर सहयोग दिया जिनकी मैं हदय से आभारी हूँ ।

गुरुवर एवं शोध-निर्देशक प्रोफेसर अहमद रज़ा खान पठाण का में विशेष आभारी हुँ ; जिनके उत्साहवर्धन तथा आत्मीयता विशेष रुप से प्राप्त हुई । प्रबंध के विषय में मार्गदर्शन के अतिरिक्त उससे जुड़े हुवे आवश्यक नियमों कि भी जानकारी एवं सलाह मुझे पठान सर से प्राप्त हुई । जिसके लिए मैं उनका सदैव ऋणी रहुँगा ।

प्रस्तुत प्रबंध का विषय उस्ताद मौलाबक्ष के विषय में होने से उनकी काफी महत्वपूर्ण माहिती मुझे उनके परिवारजनों से व विशेषत: मौलाबक्ष के वंशज नूर महम्मद(बड़ौदा), महेमूदखान योस्कीन और हरुन्नीसा खानीम मौलाबक्ष

(होलेंड) से प्राप्त हुई । हर वर्ष बड़ौदा में फरवरी- मार्च माह में होनेवाले मौलाबक्ष संगीत समारोह में मुझे प्रत्यक्ष रूप से उस्ताद मौलाबक्ष की पड़पोती मेडम हरुन्नीसा खानीम योस्कीन से मिलने का मौका मिला । व्यस्त कार्यक्रम के बावजूद उन्होंने मौलाबक्ष के विषय में मुझे कई दुर्लभ विषयों से अवगत कराया । महेमूद खान योस्कीन जिनका भी में विशेष आभारी हुँ; ई-मेल द्वारा पूछे गए हर-एक प्रश्नों का उत्तर देकर समय-समय पर उन्होंने मेरा मार्गदर्शन किया। मौलाबक्ष के विषय में कई काल्पनिक एवं मनघडन्त बातों से विपरीत प्रामाणिक जानकारी मुझे मौलाबक्ष के परिवारजनों से मिली । मौलाबक्ष कि गायनशाला के १३३ वर्ष पूर्व के कुल ११ दुर्लभ ऐसे पाठ्यपुस्तकें मुझे मौलाबक्ष निवास, याकुत पूरा, बड़ौदा यही से प्राप्त हुई, मौलाबक्ष के १८५ वर्ष पूर्व के इतिहास को प्रमाणित करना एवं उसकी समीक्षा के लिए मौलाबक्ष के परिवारजनों से काफी मार्गदर्शन प्राप्त हुआ । उन्होंने मुझे अपने स्नेह, आशिर्वाद से कृतज्ञ किया । इनके आभार प्रदर्शन के लिए मुझे शब्द नहीं मिल रहे है बस इतना ही कहूँगा कि में हमेशा मौलाबक्ष के परिवारजनों का चिर ऋणी रहूँगा ।

मुझे आरंभ से अंत तक अनेक महानुभावों ने सहयोग प्रदान किया । जिनमें संकाय के डिन श्री प्रोफेसर (डॉ.) अजय अष्टपुत्रे सर, डॉ. विकास कशाळकर सर (पूणे) तथा सभी संगीत परिवार का में बहुत आभारी हूँ ।

यहाँ जिन व्यक्तियों का नामोल्लेख किया है, उनके अलावा भी अन्य ऐसे व्यक्ति है, जिन्होंने मेरे प्रबंध को पूर्ण करने में विभिन्न रुपों से मेरी सहायता करते हुऐ मार्गदर्शन दिया है, उन सबका मैं आभार व्यक्त करता हूँ ।